ACKNOWLEDGEMENT

We sincerely express our gratitude to **“Teerthdham Manglayatan”** from where we have sourced **“Badhte Charan Junior K.G”**.

“Teerthdham Manglayatan” have taken due care, However, if you find any error, for which we request all the reader to kindly inform us at info@vitragvani.com or to Info@Manglayatan.com **“Teerthdham Manglayatan”**

हमारे जीवन शिल्पी
धर्मपिता
पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के
कर कमलों में सविनय समर्पित

हम हैं आपके,
नन्हें-मुन्ने ज्ञायक

पंच परमेष्ठी वन्दना

अरहन्तों को नमस्कार है,
सिद्धों को सादर वन्दन।
आचार्यों को नमस्कार है,
उपाध्याय को है वन्दन।
और लोक के सर्व साधुओं,
को है विनय सहित वन्दन।
पंच परम परमेष्ठी प्रभु को,
बार बार मेरा वन्दन।

हमारा नमस्कार मन्त्र

णमो अरहंताणं
णमो सिद्धाणं
णमो आइरियाणं
णमो उवज्झायाणं
णमो लोए सव्व साहूणं।

४

अरहन्त वन्दना

अरहन्त हमारे देव हैं,
रागरहित वीतराग हैं।
सारे जग के ज्ञाता हैं,
हित का मार्ग प्रदाता हैं।

चार कर्म का नाश किया,
कर्ता हैं, न धर्ता हैं।
खाते हैं, न पीते हैं,
केवल सुख के भोक्ता हैं।

क्रोध करें नहीं मान करें,
अस्त्र शस्त्र नहीं रखते हैं।
अनन्त शक्ति के धारी हैं,
निजानन्द में रमते हैं।

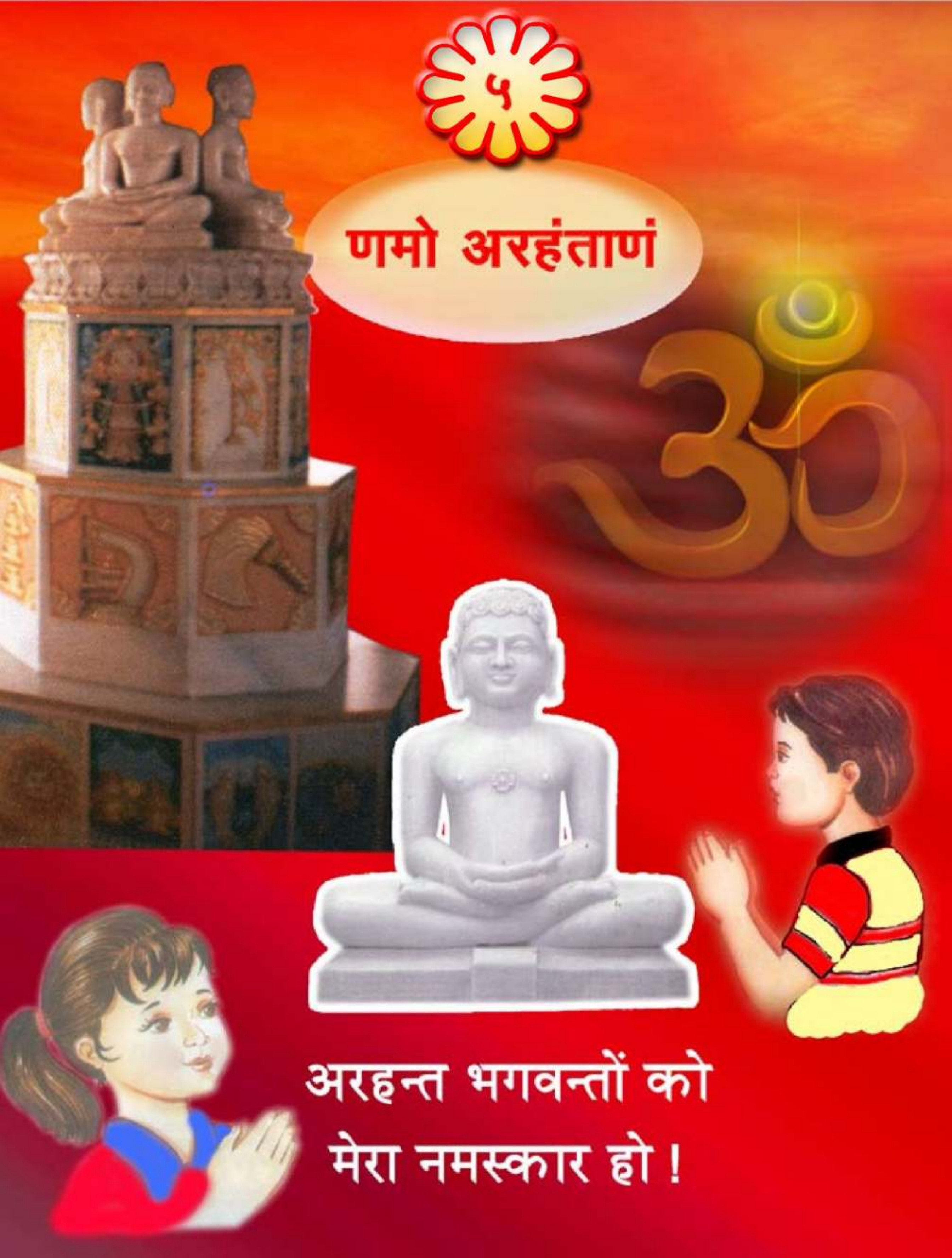
५
णमो अरहंताणं
अरहन्त भगवन्तों को
मेरा नमस्कार हो !

६

सिद्ध वन्दना

सिद्ध प्रभु आदर्श हैं मेरे,
अष्ट कर्म से रहित सदा।
देह रहित हैं, अशरीरी,
किन्तु भोगें सुख सदा।

लोक अन्त में रहते हैं,
ज्ञाता दृष्टा जिनका काम।
पुरुषाकार कहाते हैं,
ज्ञानशरीरी प्यारा नाम।

आते जाते कहीं नहीं,
स्थिर रहते, अचल सदा।
कोटि कोटि वन्दन है तुमको,
ध्यान तुम्हारा रहे सदा।

णमो सिद्धाणं
सिद्ध भगवन्तों को
मेरा नमस्कार हो।

८

आचार्य वन्दना

मोक्षमार्ग के नेता हैं,
आचार्य हमारे गुरुवर हैं।
पंचाचार पालते हैं,
जंगल ही उनका घर है।

छत्तीस गुणों के धारी हैं,
दीक्षा-शिक्षा देते हैं।
अन्त समय के आते ही,
मरण समाधि लेते हैं।

करुणा मन में जब जागे,
ग्रन्थ लिखें, उपदेश करें।
ज्ञान-ध्यान में रहते हैं,
मुक्तिवधू को वरते हैं।

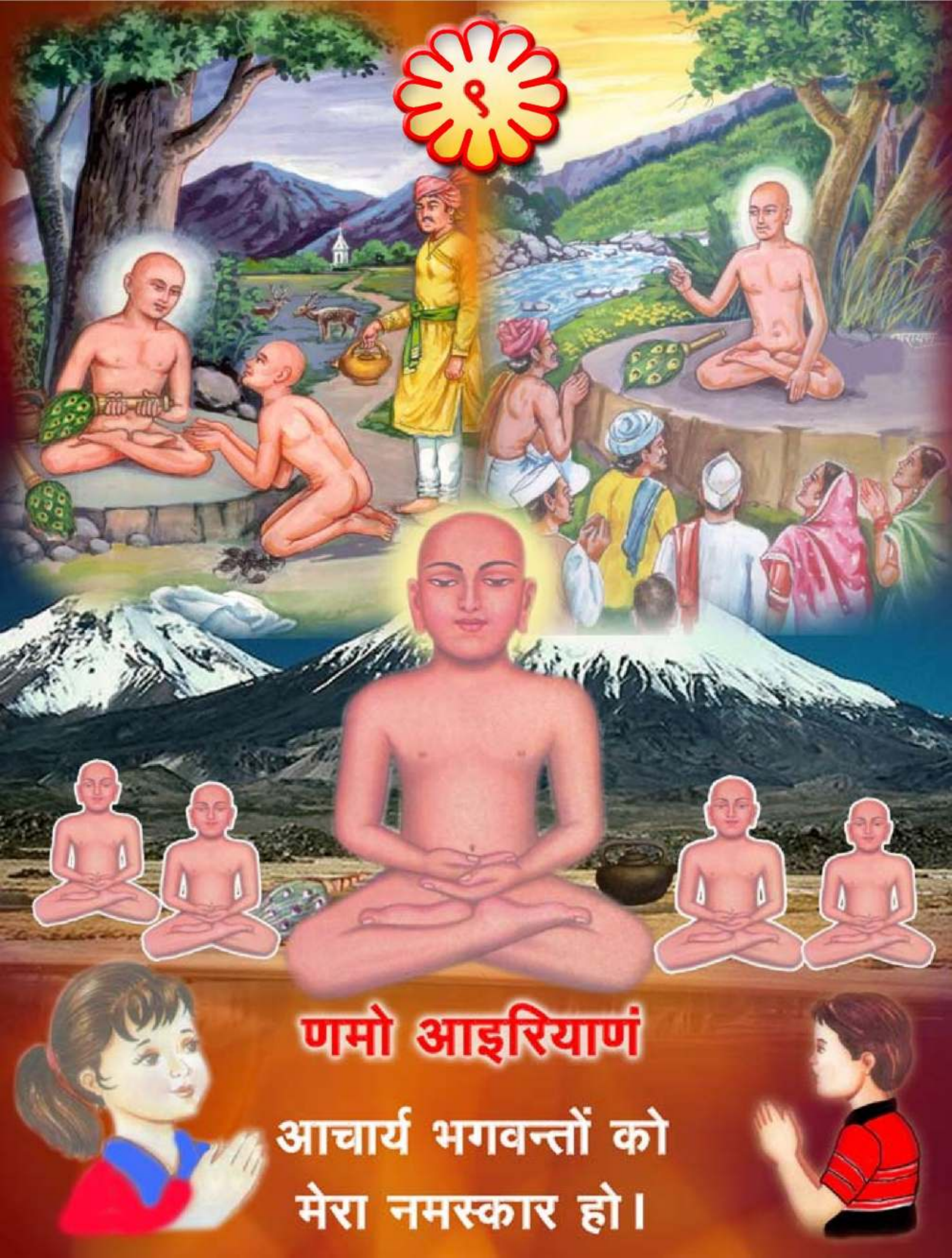
३
णमो आइरियाणं
आचार्य भगवन्तों को
मेरा नमस्कार हो।

१०

उपाध्याय वन्दना

उपाध्याय मुनिराज हैं,
पढ़ना पढ़ाना काम है।
बुद्धि के सम्राट हैं,
पाठक इनका नाम है।

पच्चीस गुणों के धारी हैं,
मुनिगण इनसे पढ़ते हैं।
अमृत झरता मुख से इनके,
पर निज में ही रहते हैं।

निज स्वरूप में रमते हैं,
सुख के झरने झरते हैं।
ऐसे गुरुवर उपाध्याय के
चरणों में हम नमते हैं।

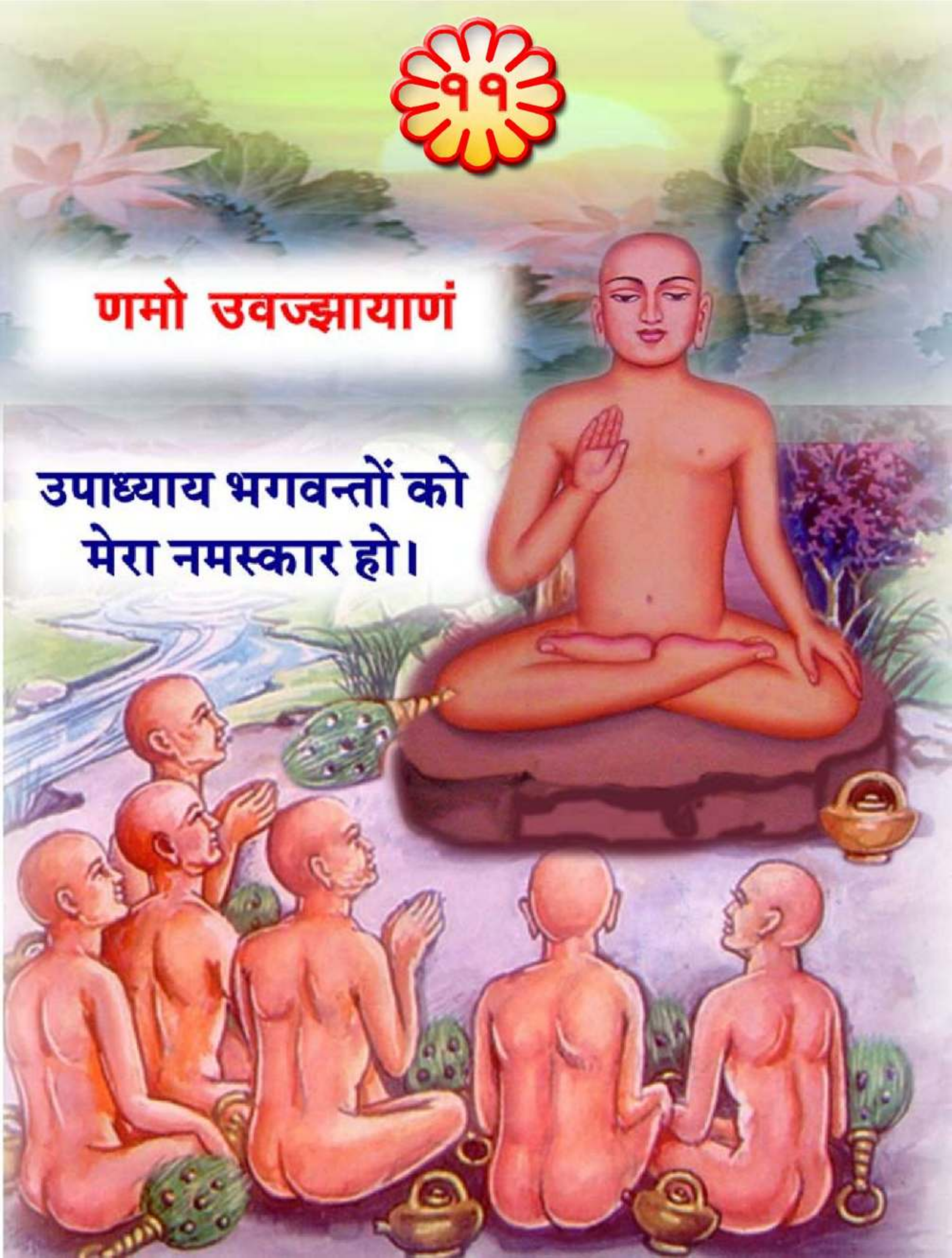
११
णमो उवज्झायाणं
उपाध्याय भगवन्तों को
मेरा नमस्कार हो।

१२

साधु वन्दना

दो अक्षर का इनका नाम,
ज्ञान-ध्यान में रहना काम।
मौन रहें, करते कल्याण,
वन जंगल है इनका धाम।

नग्न दिगम्बर रहते हैं,
बालक सम जो है निर्दोष।
उपसर्गों में शान्त रहें,
कभी नहीं करते हैं रोष।

चलते फिरते सिद्ध कहाते,
आत्मध्यान में रहते जो।
ऐसे महा मुनीश्वर गुरु को,
शत-शत वन्दन मेरा हो।

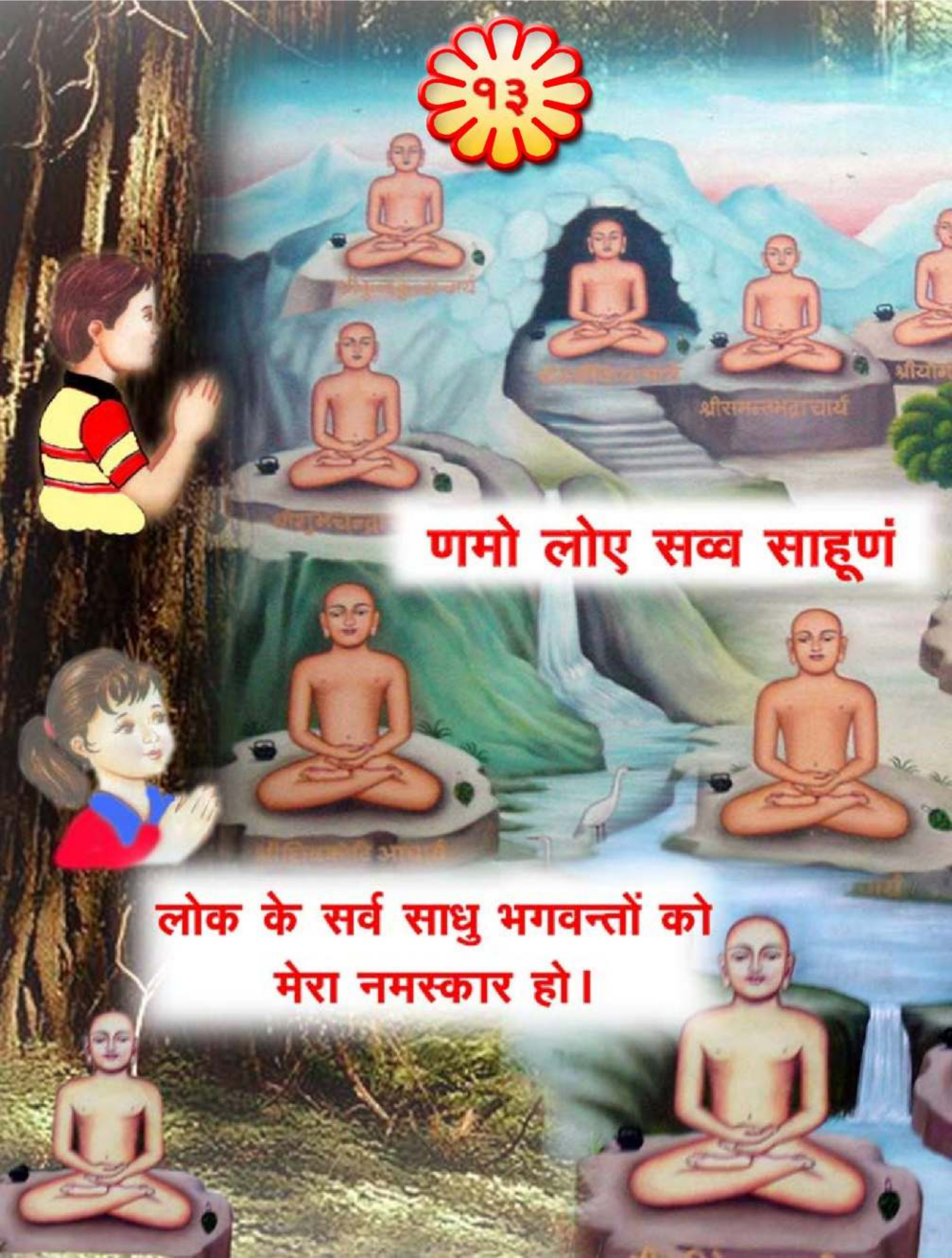

णमो लोए सव्व साहूणं

लोक के सर्व साधु भगवन्तों को
मेरा नमस्कार हो।

१४
१. ऋषभनाथ
२. अजितनाथ
३. सम्भवनाथ
हमारे चौबीस तीर्थंकर
४. अभिनन्दननाथ
५. सुमतिनाथ
६. पद्मप्रभ
७. सुपार्श्वनाथ
८. चन्द्रप्रभ

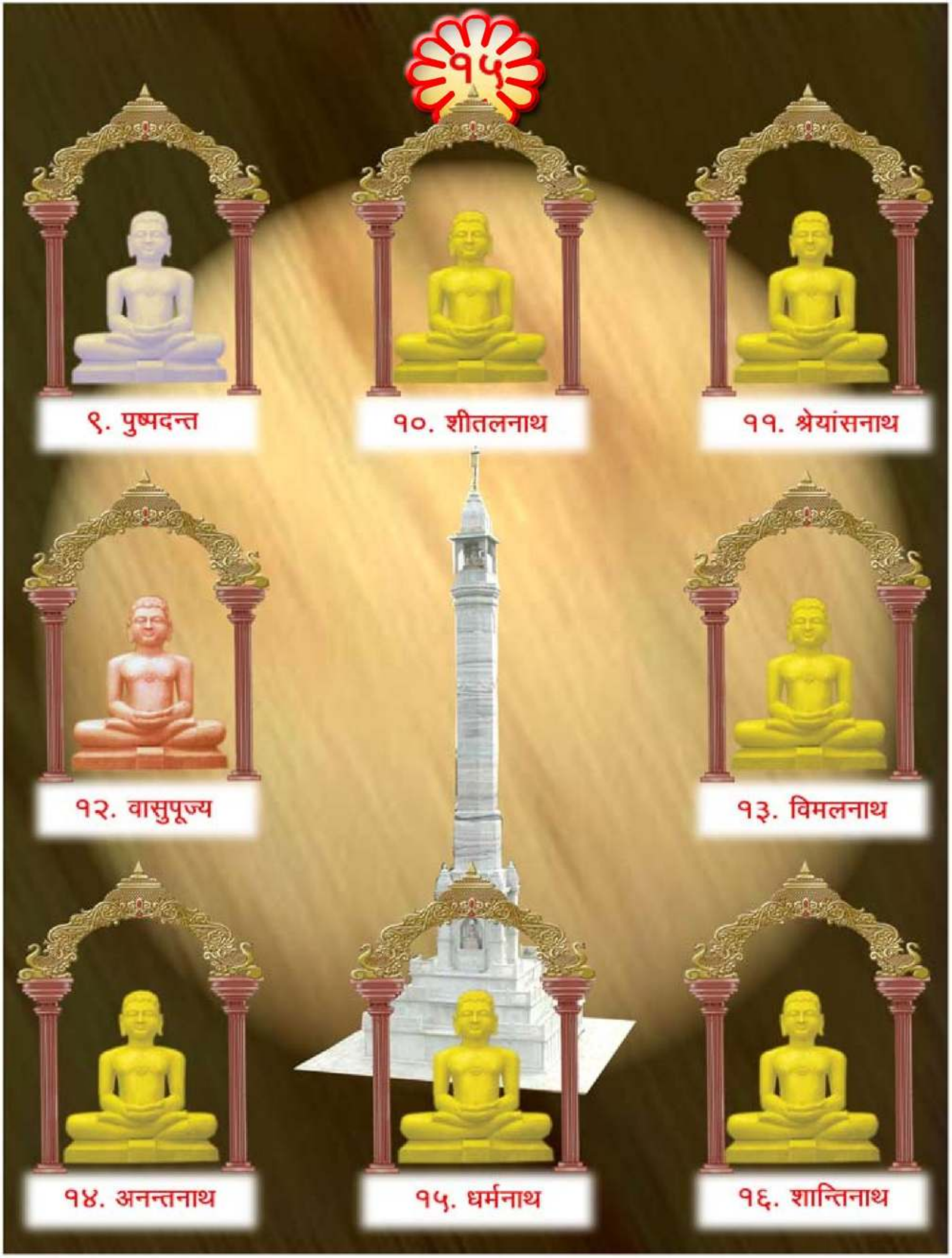
१५
९. पुष्पदन्त
१०. शीतलनाथ
११. श्रेयांसनाथ
१२. वासुपूज्य
१३. विमलनाथ
१४. अनन्तनाथ
१५. धर्मनाथ
१६. शान्तिनाथ

१६
१७. कुन्थुनाथ
१८. अरनाथ
१९. मल्लिनाथ
२०. मुनिसुव्रतनाथ
२१. नमिनाथ
२२. नेमिनाथ
२३. पार्श्वनाथ
२४. महावीरस्वामी

१७

चैतन्य और जड़

चैतन्य पदार्थ

चैतन्य पदार्थ ज्ञानस्वरूप है;
ज्ञान उसका स्वभाव है।

जड़ पदार्थ

जड़ पदार्थ में ज्ञान नहीं है।
उसका स्वभाव अचेतन है।

जड़ पदार्थ मुझ से अत्यन्त भिन्न हैं।

१८

चेतन राजा

चेतन राजा कैसा है ? सिद्ध प्रभु के जैसा है।
चेतन राजा क्या करता ? मात्र जानता देखता।
क्यों घूमें संसार में, भव-भव की मझधार में ?
चेतन खुद को भूला है, पर को देख के फूला है।
चेतन जब खुद को जाने, अपने में ही सुख माने,
सब दुःख संकट दूर करे, मोक्षमहल की सैर करे।

१९

भेदज्ञान

मैं जीव हूँ।
मुझ में ज्ञान है।
मैं ज्ञान से जानता हूँ।
मुझ में सुख है।

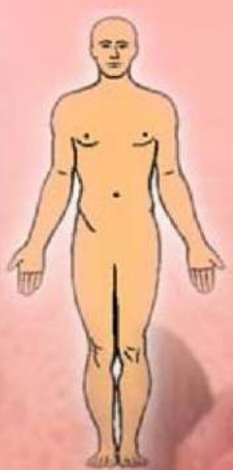

शरीर अजीव है।
शरीर में ज्ञान नहीं है।
शरीर कुछ नहीं जानता।
शरीर में सुख नहीं है।

मैं और शरीर भिन्न-भिन्न हैं।

२०

बाल गीत

हम नन्हें मुन्ने बच्चे हैं, दाँत हमारे कच्चे हैं।
झूठ कभी न बोलेंगे, दिल न किसी का दुखायेंगे।
जिनदर्शन को जायेंगे, निज स्वभाव को पायेंगे।
अब तो जल्दी करेंगे हम, अब तो मुनि बनेंगे हम।